शुल्क १५ वर्ष
३१००/- रुपये

विज्ञप्ति

एक प्रति १०/- रुपये
वार्षिक ३००/- रुपये

तेरापंथ की केन्द्रीय गतिविधियों का सर्वाधिक लोकप्रिय साप्ताहिक मुखपत्र

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) : वर्ष २३ : अंक ६ : नई दिल्ली : ५-११ मई २०१७

परम पावन आचार्यश्री महाश्रमण आदि श्रमण और महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी आदि श्रमणियां कोलकाता की ओर विहार करते हुए सानंद झारखंड प्रान्त में पधार गए हैं। अहिंसा यात्रा प्रभावक रूप में गतिमान है।

परम पूज्य आचार्यप्रवर कोलकाता की ओर

सुगति प्राप्ति के उपाय

२४ अप्रेल। परमाराध्य आचार्यप्रवर प्रातः नौवागढ़ी से कल्याणपुर की ओर प्रस्थित हुए। पूज्यप्रवर प्रवास स्थल के मुख्य द्वार पर पधारे। तब तक प्रस्थान के निर्धारित समय में कुछ समय अवशिष्ट था। आचार्यप्रवर मुख्य द्वार पर ही रुक गए और प्राप्त समय को साधना में नियोजित किया। निर्धारित समय पर आचार्यप्रवर ने गंतव्य की ओर प्रस्थान किया। गत रात्रि में हुई हल्की वर्षा के कारण मौसम सुहावना रूप लिए हुए था। विहार के दौरान नौवागढ़ी, उदयपुर, कलरामपुर, पेरूमंडल टोला, विजयनगर, ब्रह्मस्थान, नया टोला बरियारपुर, कुमारपुर, नया छावनी और कल्याणपुर के ग्रामवासियों ने पूज्यप्रवर के दर्शन कर पावन आशीर्वाद प्राप्त किया। नया टोला बरियारपुर में स्थित मध्य विद्यालय के विद्यार्थियों को भी पूज्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीर्वाद प्राप्त करने का सौभाग्य मिला। राष्ट्रीय राजमार्ग नंबर-८० पर गतिमान आचार्यप्रवर मार्ग के परिपार्श्वस्थ साध्वीवृंद के प्रवास स्थल के समीप रुके। पूज्यप्रवर वहां कुछ क्षण आसीन हुए। महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी आदि साध्वियों ने पूज्यप्रवर को वंदना की। तदुपरान्त पूज्यप्रवर ने उनसे संक्षिप्त वार्तालाप किया। वहां से पूज्यप्रवर का प्रवास स्थल करीब ६०० मीटर दूर था। आचार्यप्रवर कुल लगभग १२.२ किमी का विहार कर कल्याणपुर में पधारे। उच्च माध्यमिक विद्यालय में आज का प्रवास हुआ।

परम पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के अंतर्गत अपने मंगल प्रवचन में सुगति प्राप्ति के कारणों--तपोगुण प्रधानता, ऋजुता, शांति, संयम और परीषहजय की चर्चा करते हुए उन्हें आत्मसात् करने की प्रेरणा प्रदान की। आचार्यप्रवर से अभिप्रेरित होकर ग्रामवासियों ने अहिंसा यात्रा के तीनों संकल्प स्वीकार किए।

कल्याणपुर के मुखिया श्री सुनील सोलंकी और सरपंच श्री नंदकुमार दुबे ने पूज्यप्रवर के स्वागत में अपनी भावपूर्ण अभिव्यक्ति दी।

आज दिन-रात्रि में अनेकानेक ग्रामीण आचार्यप्रवर के दर्शन और यथावसर पावन आशीष से लाभान्वित हुए।

कल जरूर आएंगे

आज रात्रि में सागर दुबे नामक युवक के साथ अनेकानेक युवक आचार्यप्रवर के उपपात में उपस्थित हुए। उन्होंने आचार्यप्रवर के चरणस्पर्श करने की भावना व्यक्त की। उन्हें बताया गया कि आचार्यप्रवर के चरणस्पर्श का समय निर्धारित रहता है। यदि चरणस्पर्श करना चाहो तो कल सूर्योदय से पूर्व कर सकते हो। आचार्यप्रवर ने उन युवकों को कहा--'अगर आप लोग करना चाहो तो वह समय है। चरणस्पर्श करना ही है, यह कोई जरूरी नहीं।' युवक--'गुरुजी! हम क्यों नहीं चाहेंगे। ऐसा कैसे हो सकता है कि आपके पवित्र चरण हमारे गांव में पड़ें

और हम आपके पांव न छुएं। हम सुबह जरूर आएंगे।' आचार्यप्रवर ने उनसे कहा--'आप लोग और कुछ कहना चाहते हो क्या?' युवक--'गुरुजी! हम तो आपसे सुनने आए हैं। हमारे जीवन के लिए कुछ प्रेरणा दीजिए। पूज्यप्रवर ने उन्हें सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति की प्रेरणा प्रदान की। प्राप्त जानकारी के अनुसार उन युवकों ने इंटरनेट के माध्यम से आचार्यप्रवर और तेरापंथ धर्मसंघ के विषय में जानकारी प्राप्त कर रखी थी।

हाजरी के दौरान प्रायोगिक प्रशिक्षण

२५ अप्रेल। गत रात्रि में पूज्यप्रवर के चरणस्पर्श की भावना व्यक्त करने वाले स्थानीय युवक और अन्य ग्रामीण आज सूर्योदय से पूर्व ही पूज्य सन्निधि में उपस्थित हो गए। ग्राम्यजनों ने पूज्यप्रवर के चरणों का स्पर्श कर धन्यता की अनुभूति की। पूज्यप्रवर ने सूर्योदय के उपरान्त निर्धारित समय पर कल्याणपुर से सुल्तानगंज की ओर प्रस्थान किया। मार्ग में बंगाली टोला, रघुनाथपुरा, प्रेमटोला, घोरघाट, फतेहपुर, कसरगंज और जहांगीरा के ग्रामीण आचार्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीष से लाभान्वित हुए।

पूज्यप्रवर ने मुंगेर जिले की सीमा को अतिक्रान्त कर भागलपुर जिले में प्रवेश किया। गंगा नदी पर बने मार्गवर्ती क्षतिग्रस्त पुल से पूज्यप्रवर इस पार पधारे। इस पुल से भारी वाहनों का आवागमन निषिद्ध है। इस कारण इस रास्ते से आने वाले भारी वाहनों को करीब सत्तर किमी अतिरिक्त चलना होता है। इस पुल के समीप नया पुल निर्मीयमाण है। पूज्यप्रवर १३.५ किमी का विहार कर सुल्तानगंज पधारे। आज का प्रवास यहां के आदर्श मध्य विद्यालय में हुआ।

बताया गया सुल्तानगंज से गंगा उत्तर दिशा में अग्रसर होती है। इस कारण यहां का घाट प्रसिद्ध है। लोग श्रावण और चैत्र मास में कांवड़ लेकर यहां से देवघर तक (करीब १०८ किमी की दूरी तय कर) पैदल जाते हैं। प्रतिवर्ष मात्र श्रावण मास में दस से पन्द्रह लाख लोग इस उपक्रम में संभागी बनते हैं।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में 'हाजरी' के संदर्भ में उपस्थित साधु-साध्वियों को संबोधित करते हुए परम पूज्य आचार्यप्रवर ने मंगल प्रवचन में साधना के प्रति जागरूक रहने की प्रेरणा प्रदान की। आचार्यप्रवर ने अर्हत्वन्दना को तन्मयता और स्थिरता से करने हेतु प्रायोगिक प्रशिक्षण भी प्रदान किया। बाल साधु-साध्वियों को आचार्यप्रवर से विशेष संबोध प्राप्त हुआ। हाजरी वाचन के उपरान्त साधु-साध्वियों ने अपने स्थान पर खड़े होकर लेखपत्र उच्चरित किया।

आज अपराह्न में मुंगेर के जिलाधीश श्री उदयकुमार सिंह तथा भागलपुर सेलटेक्स के जॉइंट कमिश्नर श्री रामधार सिंह ने पूज्यप्रवर के दर्शन कर पावन पथदर्शन प्राप्त किया।

तीर्थंकरों के संदेशवाहक होते हैं आचार्य

२६ अप्रेल। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने प्रातः सुल्तानगंज से अकबरनगर (खैरेहिया) की ओर विहार किया। सुल्तानगंज के एक महाविद्यालय के अंतर्गत दर्शनशास्त्र विभाग के अध्यक्ष डॉ. नागेन्द्र तिवारी ने मार्ग में आचार्यप्रवर के दर्शन कर अपनी प्रसन्नता को अभिव्यक्ति देते हुए पूज्यप्रवर से आशीर्वाद प्राप्त किया। तिलकपुर के ग्रामीणों को पूज्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीष प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। तिलकपुर का एक ग्रामीण भावविभोर होकर पूज्यप्रवर के समक्ष नृत्य करने लगा। मदेशी और पईन गांव के ग्रामीणों ने भी आचार्यप्रवर के दर्शन कर पावन आशीर्वाद प्राप्त किया। मार्ग के परिपार्श्व में यत्र-तत्र लगे मकई के भुट्ठों के ढेर इस क्षेत्र में मकई की प्रचुर पैदावार को दर्शा रहे थे। मशीनों के द्वारा मकई के दानों को अलग करने और उन्हें वाहनों में लादकर अन्यत्र भेजने में व्यस्त लोग आचार्यप्रवर को देखकर अपनी करबद्ध प्रणति अर्पित कर रहे थे। मोतीचक नया टोला निवासी जयरामदास नामक ग्रामीण बोला--बाबा! भोजन लीजिए। आचार्यप्रवर

ने उससे पूछा--'खाना बना हुआ है क्या?' वह बोला--'बाबा! अभी बना हुआ तो नहीं है, लेकिन जल्दी बना देंगे।' आचार्यप्रवर ने उससे कहा--'हमारे लिए बना हुआ खाना हम नहीं ले सकते।' वह बोला--'बाबा! शरबत ले लीजिए।' आचार्यप्रवर ने फिर पूछा--'शरबत बना हुआ है क्या?' ग्रामीण बोला--'शरबत बनाने में क्या है, अभी बन जाएगा।' आचार्यप्रवर ने उससे कहा--'हम केवल आपकी भावना स्वीकार कर रहे हैं।' करीब ११.५ किमी का विहार कर आचार्यप्रवर अकबरनगर (खैरेहिया) स्थित इण्टर स्तरीय विद्यालय में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'आत्मा संसारी अवस्था में जन्म-मरण करती रहती है। संसार रूपी समुद्र को आदमी शरीर रूपी नौका से पार कर सकता है। सच्छिद्र नौका डुबोने वाली और निश्छिद्र नौका पार पहुंचाने वाली बन सकती है। आदमी को चिंतन करना चाहिए कि उसका शरीर कौन-सी नौका है? यदि आश्रव की प्रधानता है तो यह नौका सच्छिद्र और संवर की प्रधानता है तो यह निश्छिद्र होती है। कर्मों के आकर्षण का हेतुभूत आत्मपरिणाम आश्रव है। निश्छिद्र नौका को तपस्या के द्वारा आगे बढ़ाना चाहिए। त्याग और तपस्या संसार समुद्र से पार पहुंचाने के उपाय हैं।'

पूज्यप्रवर ने प्रसंगवश कहा--'तीर्थंकर अधिकृत प्रवचनकार होते हैं। वे प्रवचन के द्वारा प्राणियों को सन्मार्ग बताते हैं। आचार्य तीर्थंकर के सक्षम प्रतिनिधि होते हैं। मानों वे तो प्रभु के विश्वस्त संदेशवाहक दूत होते हैं, जो प्रभु के संदेश को जनता के बीच फैलाने का प्रयास करते हैं।'

समुपस्थित ग्रामीण जनता ने आचार्यप्रवर की प्रेरणा से अहिंसा यात्रा के तीनों संकल्प स्वीकार किए।

भगवान वासुपूज्य की पंचकल्याणक भूमि प्राचीन चंपानगरी में भव्य मंगल प्रवेश

२७ अप्रेल। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने आज प्रातः अकबरनगर (खैरेहिया) से भागलपुर की ओर प्रस्थान किया। उल्लसित भागलपुर के श्रद्धालु अलसुबह ही आचार्यप्रवर की मंगल सन्निधि में पहुंच गए। खिरहैया के ग्रामीणों ने आचार्यप्रवर के दर्शन कर पावन आशीर्वाद प्राप्त किया। मार्गस्थ ट्यूशन में अध्ययनरत विद्यार्थियों ने भी आचार्यप्रवर के दर्शन कर मंगल आशीष प्राप्त की। बसंतपुर डंगछी के ग्रामीणों और पुरानी सराय मोरी चंपानगर स्थित हॉली इन्टरनेशनल हाई स्कूल के विद्यार्थियों ने पूज्यचरणों में अपनी प्रणति अर्पित की तो आचार्यप्रवर ने उन्हें पावन आशीर्वाद प्रदान किया।

चंपानाला पुल पार कर आचार्यप्रवर ने भागलपुर में प्रवेश किया। प्राचीन अंग देश की राजधानी चंपानगरी का अर्वाचीन नाम भागलपुर है। जैन वाङ्मय एवं पूर्व इतिहास में चंपापुरी का जो वर्णन आता है, तदनुसार उस युग में चंपापुर अंगदेश की अतिविस्तृत राजधानी थी। यहां अनेक धार्मिक एवं राजनैतिक घटनाएं घटीं, जिनका ऐतिहासिक दृष्टि से बहुत महत्त्व है। चंपानगरी जैन धर्म के बारहवें तीर्थंकर भगवान वासुपूज्य की पंचकल्याणक भूमि के रूप में जानी जाती रही है। प्राप्त इतिहास के अनुसार भगवान महावीर के काल में चंपा का राजा दधिवाहन था। उसी काल में कौशाम्बी के राजा शतानीक ने दधिवाहन को पराजित कर चंपा पर अपना आधिपत्य स्थापित किया था। इतिहास इस बात का साक्षी है कि अपने पिता मगध के अधिपति महाराजा बिंबिसार (श्रेणिक) की अपने (कुणिक के) निमित्त से हुई असामयिक मौत के बाद अतिउद्विग्न पुत्र कुणिक ने राजगृह का त्याग कर चंपा को अपनी नई राजधानी बनाया था। महाराज करकंडु और महारथी कर्ण आदि अनेक राजवीरों ने चम्पा को अपनी राजधानी बनाया था। ऐसा कहा जाता है कि आज भी कर्णगढ़ आदि के भग्नावशेष यहां उपलब्ध हैं।

भगवान ऋषभ, भगवान पार्श्व एवं भगवान महावीर इस नगरी में पधारे थे एवं समवसरणस्थ भगवान महावीर की देशना सुनकर काकंदी के राजपुत्र मणिरत्न ने चंपापुरी में दीक्षा ली थी, जिसका उल्लेख 'कुवलयमाला' ग्रंथ में मिलता है। भगवान महावीर ने दो चतुर्मास चंपा में एवं एक चतुर्मास पृष्ठ चंपा में किया था।

भगवान महावीर के एक प्रमुख श्रावक 'कामदेव', सेठ सुदर्शन, (जिनको शूली की सजा देने पर शूली का सिंहासन बन गया था।) राजा श्रीपाल (जिन्होंने नवपद के प्रताप से सती मयणासुन्दरी आदि नवपत्नियों को प्राप्त कर अंत में राजा अजितसेन को पराजित कर अपने पैतृक राज्य को प्राप्त किया था।), महासती चंदनबाला (जिसने कौशाम्बी में प्रभु महावीर को सूर्प के कोने में उड़द के बाकले बहराकर पांच दिन कम छह मासोपवास का पारणा कराया था।) सती सुभद्रा (जिसने कच्चे धागे को चालणी में बांधकर कुंए से पानी निकालकर महासती का विरुद पाया था।) आदि व्यक्तित्व चंपापुरी के थे।

चंपानाला पुल से कुछ दूरी पर जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक परंपरा से जुड़े कुछ लोगों ने मार्ग से कुछ भीतर स्थित भगवान वासुपूज्यनाथ के मंदिर में पधारने की प्रार्थना की। आचार्यप्रवर मार्ग से करीब आधा किलोमीटर भीतर स्थित उस मंदिर में पधारे। संबद्ध कार्यकर्ताओं ने पूज्यप्रवर का स्वागत करते हुए मंदिर के विषय में अवगति प्रस्तुत की। आचार्यप्रवर ने वहां 'प्रभु वासुपूज्य भजलै प्राणी' गीत का आंशिक संगान किया।

पूज्यप्रवर मंदिर परिसर से पुनः मुख्य मार्ग पर पधारे। भागलपुर के मेयर श्री दीपक भुवानिया, डिप्टी मेयर श्रीमती प्रीति शेखर आदि भागलपुर के गणमान्य लोगों ने पूज्यप्रवर की भावभीनी अगवानी की। मार्ग में आचार्यप्रवर के स्वागत में खड़े रामानंदी देवी हिन्दू अनाथालय के बच्चे आचार्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीष से लाभान्वित हुए। दिगम्बर जैन समाज के अनुरोध पर आचार्यप्रवर मार्ग से करीब आधा किमी भीतर स्थित दिगम्बर जैन मंदिर की ओर पधारे। मंदिर परिसर के मुख्य द्वार के सामने स्थित काई के कारण आचार्यप्रवर दूसरे मार्ग से वासुपूज्य मंदिर परिसर में पधारे। बड़ी संख्या में उपस्थित दिगम्बर समाज के लोगों ने आचार्यप्रवर का भावभीना स्वागत किया। पूज्यप्रवर प्राचीन एवं अर्वाचीन दोनों मंदिरों के परिसरों में पधारे और वहां 'प्रभु वासुपूज्य भजलै प्राणी' गीत का आंशिक संगान किया। चंपानगरी भगवान वासुपूज्य और सती सुभद्रा से जुड़ी हुई भूमि है, इसमें कोई मतभेद नहीं, किन्तु कौनसा स्थान उनसे जुड़ा हुआ है, इस विषय में दिगम्बर जैन समाज और जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक समाज के अपने-अपने मत हैं। लोगों के अनुरोध पर आचार्यप्रवर परिपार्श्वस्थ पद्मप्रभु मंदिर में भी पधारे और वहां 'पद्मप्रभु नित समारिये' गीत का आंशिक संगान किया। पूज्यप्रवर दिगम्बर जैन मंदिर से पुनः मुख्य मार्ग पर पधारे, तब तक करीब दो किमी की अतिरिक्त दूरी तय हो गई थी।

आज का निर्धारित विहार प्रलंब था। आचार्यप्रवर द्वारा भागलपुर के दिगम्बर जैन समाज और जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक समाज पर किए गए अनुग्रह से ये दूरी तीन किमी से ज्यादा बढ़ गई। इस कारण विलंब होना स्वभाविक था। सूर्य भी अपनी तेजस्विता के साथ आज प्रखर रूप धारण किए हुए था। वातावरण में व्याप्त उमस 'आग में घी' का कार्य कर रही थी। प्रातःकाल लंबे रूप में दृष्टिगोचर होने वाली शरीर की छाया आकाश के मध्य भाग में अवस्थित सूर्य के कारण बिल्कुल सिमट गई थी। ऐसे में आचार्यप्रवर का तन स्वेदधारा से तरबतर बना हुआ था। बादलों की छोटी-छोटी टुकड़ियां मानों महातपस्वी आचार्यप्रवर के लिए सूर्य से लोहा ले रही थी। कभी सूर्य बादलों के छोटे आकार पर हंस रहा था तो कभी बादल सूर्य को अदृश्य होने के लिए विवश कर रहे थे। वीतरागकल्प आचार्यप्रवर का मन बादलों की विजय और सूर्य की पराजय की कामना से रहित था। आचार्यप्रवर समत्व भाव से निरंतर गंतव्य की ओर गतिमान थे।

आचार्यप्रवर के स्वागत में स्थान-स्थान पर खड़े विभिन्न वर्गों के लोग पूज्यचरणों में अपनी प्रणति अर्पित कर पावन आशीष प्राप्त कर रहे थे। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के स्वयंसेवक और मुस्लिम माइनेरिटी कॉलेज के विद्यार्थियों के समीप आचार्यप्रवर ने अपने चरण रोक कर उन्हें मंगल आशीर्वाद प्रदान किया। स्थानीय विधायक श्री अजित शर्मा और जिला परिषद अध्यक्ष श्री दुनदुन शाह ने पूज्यप्रवर का भावपूर्ण स्वागत किया। पूज्यप्रवर का संबद्ध लोगों के अनुरोध पर मार्गस्थ जैन श्वेताम्बर पार्श्वनाथ मंदिर में भी पावन पदार्पण हुआ।

तेरापंथ की आचार्य परंपरा में आचार्यप्रवर के प्रथम पदार्पण से जैन समाज की ऐतिहासिक नगरी और

राजा कर्ण की भूमि के रूप में विख्यात तथा सिल्क उद्योग के लिए ख्यातनाम भागलपुर का न केवल तेरापंथ समाज अपितु अन्य जैन एवं जैनेतर समाज भी अतिशय उल्लसित था। चारों ओर उत्साहपूर्ण वातावरण छाया हुआ था। गंगा किनारे अवस्थित इस शहर की जनता में आज भक्ति का भाव मुखर बना हुआ था। भव्य स्वागत जुलूस में जैन एवं जैनेतर का भेद मानों विलुप्तप्राय था।

नाथनगर मुस्लिम समाज, मारवाड़ी युवा मंच, नगर मारवाड़ी सम्मेलन, अग्रवाल समाज, दिगम्बर जैन समाज, श्वेताम्बर श्रीसंघ, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ, एनसीसी स्काउट एंड गाइड, लायंस क्लब, विश्व हिन्दू परिषद, विद्यार्थी परिषद, स्वर्णकार संघ, बिहारी-बंगाली समिति, रोटरी क्लब, फतेह हेल्प सोसाइटी, चेम्बर ऑफ कॉमर्स, ड्रग एसोसिएशन, केन्द्रीय रेलवे यात्री संघ, बार एसोसिएशन, नागरिक विकास समिति, राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ से जुड़े विद्यालयों तथा जैन विद्यालयों के विद्यार्थियों की उपस्थिति से भव्य स्वागत जुलूस अहिंसा यात्रा के प्रथम आयाम 'सद्भावना' का साकार रूप बना हुआ था।

मुस्लिम माइनेरिटी कॉलेज से प्रारम्भ हुआ भव्य स्वागत जुलूस ततारपुर, स्टेशन चौक, वेराइटी चौक, खलीफाबाग चौक होते हुए आनंदराम ढाँढनियाँ सरस्वती विद्या मंदिर में पहुंचा। आचार्यप्रवर का भागलपुर के त्रिदिवसीय प्रवास में से दो दिनों का प्रवास इसी विद्यालय में हुआ। विद्यालय से जुड़े कार्यकर्ताओं, शिक्षकों आदि ने पूज्यप्रवर का भावभीना स्वागत किया। विद्यालय परिवार में आचार्यप्रवर के पदार्पण से उल्लासमय वातावरण था। आज का कुल विहार करीब १८ किमी का रहा।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में पूज्यप्रवर के पदार्पण से पूर्व महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी और मुख्यनियोजिकाजी के उद्बोधन हुए। परम पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में आत्मकर्तृत्ववाद को व्याख्यायित करते हुए पापों से बचने की प्रेरणा प्रदान की। आचार्यप्रवर ने श्रीमज्जयाचार्य रचित चौबीसी के बारहवें स्तवन 'प्रभु वासुपूज्य भजलै प्राणी' का संगान भी किया।

कार्यक्रम में भागलपुर तेरापंथ महिला मंडल और कन्या मंडल द्वारा स्वागत गीत का संयुक्त रूप से संगान किया गया। तेरापंथी सभा अध्यक्ष श्री गणेश बोथरा, आचार्यश्री महाश्रमण अक्षय तृतीया प्रवास व्यवस्था समिति के संयोजक श्री हंसराज बेताला, दिगम्बर समाज के अध्यक्ष श्री अशोक पाटनी, चंपापुर दिगम्बर जैन तीर्थ क्षेत्र के मंत्री श्री सुनील जैन, दिगम्बर न्यास बोर्ड के अध्यक्ष श्री गोपाल जैन और श्रीसंघ श्वेताम्बर समाज की ओर से श्री विवेक दुगड़ ने आचार्यप्रवर के अभिनंदन में अपने हृदयोद्गार व्यक्त किए। तेरापंथ युवक परिषद के सदस्यों ने गीत के द्वारा पूज्यचरणों में अपनी प्रणति अर्पित की। ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने आचार्यप्रवर के अभिनन्दन में अपनी प्रस्तुति दी। आनंदराम ढाँढनियाँ सरस्वती विद्या मंदिर के प्रधानाचार्य श्री मनोज मिश्र ने अपने विद्यालय परिसर में पूज्यप्रवर का स्वागत करते हुए त्रिदिवसीय प्रवास के संदर्भ में पूज्यचरणों में कृतज्ञता अर्पित की।

कार्यक्रम के उपरान्त भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय प्रवक्ता श्री शाहनवाज हुसैन ने पूज्यप्रवर के दर्शन किए। वे बोले--'आचार्यश्री! आपका भागलपुर में सादर स्वागत करता हूं। मैंने आपसे सिलीगुड़ी में वादा किया था कि जब तक आप भागलपुर में रहेंगे, मैं भी वही रहूंगा। इसलिए अब मैं तीन दिनों तक आपकी सेवा में रहूंगा।'

भागलपुर में शांतिदूत का नागरिक अभिनन्दन

२८ अप्रेल। भागलपुर प्रवास का द्वितीय दिन। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर प्रातः भागलपुर के 'तेरापंथ उपासना कक्ष' में पधारे और वहां कुछ क्षण आसीन हुए। स्थानीय तेरापंथ के लोगों ने पूज्यप्रवर के समक्ष उपासना कक्ष के विषय में अवगति प्रस्तुत की।

प्रवास स्थल परिसर में समायोजित मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में साध्वीवर्याजी ने अपने अभिभाषण में कषाय

को उपशांत बनाने की प्रेरणा दी। मुख्यमुनिश्री ने अपने वक्तव्य में चंपापुरी के इतिहास से संबंधित प्रसंग सुनाते हुए धर्म के प्रति दृढ़ रहने की प्रेरणा दी।

परम पावन आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में कहा--'हमारा जीवन शरीर और आत्मा इन दो तत्त्वों का योग है। शरीर नश्वर है, विनाशधर्मा है और आत्मा को अमर कहा गया। जीवन के लिए इन तत्त्वों का योग आवश्यक है। केवल शरीर अथवा केवल आत्मा से जीवन नहीं होता। शरीर और आत्मा का अलग-अलग होना ही मृत्यु है। यह अलगाव हमेशा के लिए होता है तो उसे मोक्ष कहा जाता है। आदमी को यह ध्यान देना चाहिए कि वह अपने जीवन का क्या उपयोग कर रहा है।

मृत्यु एक ऐसा तत्त्व है जिसका होना निश्चित है, किन्तु कब होना प्रायः अनिश्चित है। वह तो मानों निष्पक्ष है। कितना ही बड़ा व्यक्ति हो, मौत की गिरफ्त से छूट नहीं सकता। मृत्यु न तो किसी प्रलोभन में आती है और न ही किसी से डरती है। आदमी के लिए यह ध्यातव्य है कि मृत्यु के बाद वह कहां जाएगा? जीवन में हिंसा, माया, झूठ आदि का प्राधान्य है तो दुर्गति में जाना पड़ सकता है। यदि ऋजुता, संयम और साधना है तो आत्मा सुगति को प्राप्त हो सकती है तथा परम साधना हो तो मोक्ष को प्राप्त किया जा सकता है।

भगवान वासुपूज्य जैसे महापुरुष ने चेतना की परम निर्मलता प्राप्त कर लिया। चन्दना, जिनका सतीत्व मुखर हो गया। सुभद्रा, जिनका शील प्रस्फुरित हो गया। ऐसे अनेक प्रसंग चंपानगरी से जुड़े हुए हो सकते हैं। फिर कर्ण की बात भी यहां से जुड़ी हुई बताई गई। यह भागलपुर का क्षेत्र, जहां हमारा आगमन हुआ है। नागरिक अभिनन्दन का उपक्रम रखा गया है। अभिनन्दन एक उपचार है, परन्तु उपहार यह होना चाहिए कि जीवन में सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति को अपनाएं। भौतिक वस्तुओं का उपहार हमारे काम का हो या न हो, सद्भावना, नैतिकता व नशामुक्ति--जैसे संकल्पों का उपहार मिल जाए तो वह अति महत्त्वपूर्ण हो सकता है।

आचार्यप्रवर के आह्वान पर उपस्थित गणमान्य व्यक्तियों सहित उपस्थित जनमेदिनी ने अहिंसा यात्रा के तीनों संकल्प ग्रहण किए।

पूज्यप्रवर के प्रवचन के उपरान्त भागलपुरवासियों द्वारा आचार्यप्रवर के नागरिक अभिनन्दन का उपक्रम रहा। तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्ष श्री सरोज बोहरा ने अपनी अभिव्यक्ति देते हुए संकल्पों का उपहार प्रस्तुत किया। तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष श्री अमृत बेताला ने पूज्यप्रवर के अभिनंदन में अपनी श्रद्धाभिव्यक्ति दी।

भागलपुर नगर निगम के मेयर श्री दीपक भुवानियां ने कहा--'मैं आचार्यश्री महाश्रमणजी का भागलपुर की धरती पर स्वागत करते हुए श्रीचरणों में नमन करता हूं। भागलपुर का भाग्योदय हुआ कि ऐसे महापुरुष यहां पधारे हैं। आपके आशीर्वचनों से हमारा शहर और हम शहरवासी धन्य हुए। मैं गुरुदेव से निवेदन करूंगा कि आप बार-बार यहां पधारते रहें।'

भागलपुर की डिप्टी मेयर श्रीमती प्रीति शेखर ने कहा--'आचार्यश्री के आगमन से यह अंग की धरती धन्य-धन्य हो गई। ऐसे महामानव के प्रति श्रद्धासुमन अर्पित करने का सौभाग्य प्राप्त कर मैं अभिभूत हूं। आश्चर्य होता है कि एक मानव ने धूप-छांव और बरसात की परवाह किए बिना पांव-पांव चलकर ४०,००० किमी की पदयात्रा कर ली है। मैं आपके सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति के संदेश को न सिर्फ स्वयं अपनाऊंगी, अपितु गांव-गांव जाकर जन साधारण तक इस संदेश को पहुंचाऊंगी। आपके इस मिशन से विश्व को निश्चित रूप से नई दिशा मिलेगी।'

भागलपुर विधायक श्री अजित शर्मा ने कहा--मैं अपनी ओर से तथा भागलपुर की समस्त जनता की ओर से आचार्यश्री का हार्दिक स्वागत-अभिनन्दन करता हूं। आप जैसे महापुरुष का पदार्पण हमारे लिए अत्यंत गर्व की बात है। आपने मानव-मानव के कल्याण के लिए जो बीड़ा उठाया, वह अपने आप में स्तुत्य है। आपके

आशीर्वाद की कामना करते हुए यह संकल्प व्यक्त करता हूं कि आपके द्वारा करवाई गई तीनों प्रतिज्ञाओं का दृढ़ता से पालन करते हुए इन्हें जन-जन में प्रसारित करूंगा।

लॉयन अनुपम सिंघानिया ने कहा--यह बहुत ही सुखद अवसर है कि मेरे अपने शहर में एक महान विभूति का आगमन हुआ है। आचार्यश्री के मिशन से न केवल भारत देश, अपितु पूरा विश्व लाभान्वित होगा। मैं आचार्यश्री का बहुत-बहुत स्वागत-अभिनन्दन करता हूं।'

राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के जिला संघ चालक प्रोफेसर राणा प्रताप सिंह ने कहा--'इस अंग की भूमि, परम पूज्य वासुपूज्य की भूमि और सती सुभद्रा की भूमि पर मैं आपका वन्दन, स्वागत और अभिनन्दन करते हुए आपके चरणों में श्रद्धासुमन अर्पित करता हूं। आपका यह आगमन राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की लक्ष्यपूर्ति में सबल सहायक बनेगा।'

भागलपुर मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष श्री श्रवण बाजोरिया ने कहा--'आचार्यश्री महाश्रमणजी मन, वचन और काय की एकरूपता के साक्षात् आदर्श हैं। सत्य और ऋजुता से परिपूर्ण आपका जीवन सबके लिए अभिवंदनीय है। ऐसे महर्षि का मैं भागलपुर की धरती पर अभिनंदन करता हूं।'

वरिष्ठ समाजसेवी तथा श्रीश्री गोशाला के अध्यक्ष श्री लक्ष्मीनारायण डेकानियां ने कहा--'मैं प्रतिदिन संस्कार चैनल पर आचार्यश्री महाश्रमणजी के प्रवचन सुनता हूं। इनके प्रवचन से मुझे ऊर्जा मिलती है और उससे सेवा की भावना और ज्यादा बलवती बनती है। इस तपोभूमि पर ऐसे महासंत का आगमन हमारा परम सौभाग्य है। मैं नगर के समस्त समाजसेवियों की ओर से आचार्यश्री के चरणों में भावों के सुमन अर्पित करता हूं।'

फादर वर्गीज ने कहा--'यह मेरा परम सौभाग्य है कि मुझे ईसाई समाज की ओर से आचार्यश्री के स्वागत का सुअवसर मिल रहा है। आप जैसे महान और महत्त्वपूर्ण संत को देखकर अभिभूत हूं। आप हिंसा और नशाखोरी जैसी बुराइयों को समाप्त करने के लिए लोगों का हृदय परिवर्तन कर रहे हैं। यह एक महान कार्य है।'

विश्व हिन्दू परिषद के संपर्क प्रमुख श्री राकेश सिन्हा ने कहा--'भारतीय संत परंपरा के महान संवाहक आचार्यश्री को मैं कोटि-कोटि नमन करते हुए चंपा की इस धरती पर आपका बहुत-बहुत स्वागत करता हूं। जब पूरे विश्व में हिंसा का बोलबाला है, ऐसे समय में आपकी अहिंसा यात्रा एक आशा की किरण है। आचार्यश्री! आपका संदेश हमें नई राह दिखा रहा है। वर्ग, जाति आदि से परे आपकी इस यात्रा से अखंड भारत का सपना पुनः साकार बनेगा, ऐसा विश्वास है।'

भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय प्रवक्ता श्री शाहनवाज हुसैन ने कहा--'राष्ट्र संत आचार्यश्री महाश्रमणजी का भागलपुर की समस्त जनता की ओर से बहुत-बहुत अभिनंदन करता हूं। मुझे उदयपुर, दिल्ली, किशनगंज और सिलीगुड़ी में आपके दर्शन और आशीर्वाद प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। सिलीगुड़ी में मैंने आपके समाने एक बात कही थी कि जब आप भागलपुर पधारेंगे तो मैं कितना भी व्यस्त रहूं, लेकिन जब तक आप रहेंगे, मैं भी भागलुपर में उपस्थित रहकर आपकी सेवा में सेवक के तौर पर रहूंगा। भागलुपर में तेरापंथ समाज के लोगों की संख्या कम हो सकती है, लेकिन किसी भी शहर से कम श्रद्धा भागलपुर में आपके लिए नहीं है। आपका संदेश सिर्फ समाज के लिए ही नहीं, पूरे ब्राह्मांड के लिए है। आपके संदेशों की जरूरत संपूर्ण देश और विश्व को है। मैं गर्व के साथ कह सकता हूं कि मैं अक्षरशः आपके संदेश पर चलता हूं। अभी मैं एक सियासी पार्टी का तर्जुमान हूं, किन्तु मैं अहिंसा यात्रा का भी तर्जुमान बनकर पूरे देश और विश्व में तर्जुमानी करूंगा, यह मेरी जुबान है। आज जरूरत है कि आपके संदेशों को सिर्फ सुना ही न जाए, बल्कि अपने जीवन में अपनाया भी जाए। मैं उम्मीद करता हूं कि भागलपुर सदा आपको याद रहेगा। आप सदा अपने मन और दिल में हम भागलपुरवासियों के लिए स्थान रखेंगे, ऐसे आशीर्वाद की कामना करते हुए

आपका पुनः बहुत-बहुत अभिनन्दन करता हूं।'

जै.वि.भा. मान्य विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति और भागलपुर के पूर्व सांसद डॉ. रामजी सिंह ने कहा--जैन धर्म के बारहवें तीर्थंकर भगवान वासुपूज्य की भूमि पर महान जैनाचार्य श्री महाश्रमणजी का सादर अभिनन्दन करता हूं और पुनः-पुनः यहां पधारने की प्रार्थना करता हूं।' कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी और श्री उज्जैन मालू ने किया।

आज भागलपुर के सांसद श्री बूलोमंडल, जिला परिषद के अध्यक्ष श्री दुनदुनप्रसाद शाह, भागलपुर सेलटेक्स डिपार्टमेंट के जॉइंट कमिश्नर, वरिष्ठ अधिवक्ता डॉ. साधना झा, बिहार विश्व हिन्दू परिषद के संगठन मंत्री श्री अनिलजी आदि अनेक गणमान्य व्यक्ति पूज्यप्रवर के दर्शन और पावन पथदर्शन से लाभान्वित हुए।

अक्षय तृतीया समारोह का भव्य आयोजन

२६ अप्रेल। वैशाख शुक्ला तृतीया/चतुर्थी। अक्षय तृतीया महोत्सव। आज का मुख्य प्रवचन कार्यक्रम श्री श्री गोशाला में समायोज्य था। परम पावन आचार्यप्रवर प्रातराश के उपरान्त सरस्वती विद्या मंदिर से प्रस्थान कर श्रीश्री गोशाला परिसर में पधारे। गोशाला के अध्यक्ष श्री लक्ष्मीनारायण डेकानिया आदि पदाधिकारियों ने आचार्यप्रवर का भावभीना स्वागत किया। गोशाला परिसर में निर्मित विशाल ऋषभ समवसरण में समायोजित मुख्य प्रवचन कार्यक्रम का शुभारम्भ परम पूज्य आचार्यप्रवर के मंगल महामंत्रोच्चार से हुआ। भागलपुर अक्षय तृतीया प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष श्री टीकमचंद बेताला ने अपनी श्रद्धासिक्त अभिव्यक्ति दी। तेरापंथ महिला मंडल और तेरापंथ कन्या मंडल ने गीत को संयुक्त रूप में प्रस्तुति दी।

साध्वीवर्याजी ने अपने अभिभाषण में कहा--'भगवान ऋषभ का जीवन सर्वांगीण जीवन रहा है। वे एक ऐसे महापुरुष थे, जिनके जीवन का अथ समाज व्यवस्था से हुआ और इति निर्वाण से हुई। उन्होंने निर्माता, विधाता और अभयप्रदाता बनकर अस्त, व्यस्त और संत्रस्त मानव जाति को बहुत कुछ दिया, सभ्यता-संस्कृति के साथ जीवन जीने के संस्कार दिए। आज अक्षय तृतीया का पावन दिन है और हमें महातपस्वी आचार्यप्रवर की मंगल सन्निधि प्राप्त है। मैं आचार्यप्रवर से यही आशीर्वाद चाहती हूं कि हमारा संयम, समता और आनंद अक्षय बने।' साध्वीवर्याजी ने आचार्य महाप्रज्ञजी द्वारा रचित 'ऊँ ऋषभाय नमः ऊँ' गीत का संगान किया।'

मुख्यमुनिश्री ने अपने वक्तव्य में कहा--'भगवान ऋषभ इस अवसर्पिणी के तीसरे आरे की सम्पन्नता के समय इस भरत क्षेत्र में जन्मे। वे इस युग के प्रथम राजा, प्रथम मुनि, प्रथम केवल ज्ञानी और प्रथम तीर्थंकर थे। उन्होंने मानव सभ्यता के विकास का प्रारंभ किया था। असि, मसि और कृषि के द्वारा उन्होंने युग को आगे बढ़ना सिखाया। उनका जीवन द्वंद्वात्मक स्थितियों में सम रहने की प्रेरणा देता है। उन्होंने आहार की अनुपलब्धता की स्थिति में समभाव से साधिक एक वर्ष की तपस्या कर ली। उनकी इस तपस्या को स्मृति में रखकर कितने-कितने लोग एकान्तर रूप में वर्षीतप करते हैं। तपस्या करना हर किसी के लिए सहज नहीं होता, किन्तु तपस्वियों के अनुमोदन से भी कुछ लाभ प्राप्त किया जा सकता है। तपस्वियों की अनुमोदना में यदि आप लोग एक संकल्प कर लें कि गुस्से में किसी को कठोर वचन नहीं कहेंगे तो यह आपके लिए भी लाभप्रद हो सकेगा। चंपानगरी (भागलपुर) वही भूमि है, जहां प्रभु महावीर के अभिग्रहयुक्त प्रलंब तप का पारणा चंदनबाला के दान से हुआ था। उस सुपात्र दान की भूमि पर आज मानों फिर इतिहास दोहरा रहा है कि तपस्वी लोगों को महातपस्वी आचार्यप्रवर के माध्यम से सुपात्र दान का अवसर मिलने वाला है।' मुख्यमुनिश्री ने आचार्य तुलसी द्वारा रचित 'आयो आदीश्वर रै वर्षीतप रो पारणोजी' गीत का संगान भी किया।'

मुख्यनियोजिकाजी ने कहा--'आज हम आचार्यप्रवर के पावन सान्निध्य में अक्षय तृतीया पर्व मना रहे हैं। आज के दिन भगवान ऋषभ के वर्षीतप का पारणा हुआ था। भगवान ऋषभ ने वर्षीतप किया, किन्तु वह

सलक्ष्य नहीं किया। आचार्यप्रवर के समक्ष बैठे तपस्वियों ने सलक्ष्य वर्षीतप किया है। तपस्या दस धर्मों में एक है। वैदिक परंपरा में भी तपस्या का महत्त्व बताया गया है। तपस्या के द्वारा आदमी पूर्वबद्ध कर्मों को तोड़ने का प्रयत्न करता है, अपनी शुद्धि करता है। वर्षीतप करने वाला व्यक्ति एक बड़ी साधना करता है। तपस्वी आध्यात्मिक, भावनात्मक, मानसिक और शारीरिक लाभ को प्राप्त कर सकता है। आचार्यश्री महाश्रमणजी फरमाते हैं-'शुभ योग में रहना भी तपस्या है।' शुभ योगों में रहने वाला व्यक्ति आत्मोत्थान कर सकता है।'

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने अपने उद्‌बोधन में कहा--'वैशाख मास त्रेतायुग का साक्षी माना जाता है। त्रेतायुग जागृत होने का प्रतीक होता है। अक्षय तृतीया लौकिक पर्व है तो लोकोत्तर पर्व भी है। कुछ लोग इसका संबंध कृषि के साथ जोड़ते हैं। इस दिन को शुभ मुहूर्त का प्रतीक भी माना जाता है। मौसम का मिजाज जानने के लिए भी लोग आज के दिन कुछ प्रयोग करते थे। आज हम भगवान ऋषभ के संदर्भ में अक्षय तृतीया पर विचार कर रहे हैं। भगवान ऋषभ इस युग में कर्मयुग के प्रणेता थे। उन्होंने दीक्षा के साथ मौन व्रत धारण कर लिया था। उनसे पहले कोई साधु नहीं बना था तो लोग साधु की भिक्षा विधि से अपरिचित थे। इसलिए करीब तेरह माह बाद उन्हें भिक्षा प्राप्त हुई और आज के दिन उन्होंने पारणा किया। मानों आज का यह त्यौहार उस तपस्या के अभिनन्दन का उत्सव है।

वर्षीतप करना अत्यन्त कठिन कार्य है। जिनका मनोबल प्रबल होता है, वे वर्षीतप कर सकते हैं। भगवान ऋषभ ने जैसा वर्षीतप किया, वैसा करना तो आज संभव नहीं है। किन्तु आज जो वर्षीतप का क्रम बना हुआ है, वह भी बड़ी बात है। वर्षीतप के साथ साधना का क्रम भी बना हुआ है, जो वर्षीतप को और अधिक प्रशस्य बनाता है। आज का यह अवसर वास्तव में महत्त्वपूर्ण अवसर है। आचार्यप्रवर का भागलपुर पदार्पण भी अपने आप में एक महत्त्वपूर्ण घटना है। आचार्यप्रवर की मंगल सन्निधि में वर्षीतप के समापन का यह अवसर भागलपुर के इतिहास में एक नई कड़ी के रूप में जुड़ रहा है। हम कामना करते हैं कि परम पूज्य आचार्यप्रवर के मंगल सन्निधि में ऐसे आध्यात्मिक उपक्रम और अधिक महनीय ढंग से हम मनाते रहें तथा जैन शासन की प्रभावना होती रहे। दो पंक्तियों के साथ अपनी बात पूर्ण कर रही हूं--

महाश्रमण की मंगल सन्निधि, आखा तीज अनूठा उत्सव।
तप करने वाले हैं दाता, महातपस्वी ग्राहक अभिनव।।

समाजनीति, राजनीति और अध्यात्मनीति विज्ञान के प्रणेता थे भगवान ऋषभ

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'वर्तमान अवसर्पिणी में प्रस्तुत भरत क्षेत्र में हुए चौबीस तीर्थंकरों में आदि तीर्थंकर भगवान ऋषभ हुए। हम वर्तमान समय में देखें तो भारत में लोकतांत्रिक प्रणाली से शासन चल रहा है। उसके भीतर भी विधान, शासन और शोधन की बात है। शासन की प्रणाली लोकतांत्रिक हो या राजतांत्रिक--दोनों के लक्ष्य में विशेष अंतर प्रतीत नहीं होता। लक्ष्य प्राप्ति के मार्ग भिन्न-भिन्न हो सकते हैं। कानून व्यवस्था बनाना और उसका पालन करवाना दोनों का उद्‌देश्य प्रतीत होता है।

मैं भगवान ऋषभ के जीवन पर भक्तिपूर्ण दृष्टिपात करता हूं। मुझे लगता है कि उनमें विशेष ज्ञान था। इस ज्ञान के आधार पर उन्होंने तीन अवदान दिए। उनका पहला अवदान समाजनीति के रूप में प्राप्त हुआ। वे समाजनीति विज्ञान के प्रणेता थे। जीवन की अपेक्षापूर्ति के लिए मानों मां बनकर जनता को प्रशिक्षण दिया। यह उनका सामाजिक अवदान कहा जा सकता है। उन्होंने कृषि का प्रशिक्षण देकर अनाज प्राप्त करना सिखाया। भगवान ऋषभ से पहले ऐसी वैवाहिक प्रणाली विकसित नहीं थी, जो आज है। उनसे पहले तक माता-पिता के एक पुत्र और एक पुत्री--यों दो ही संतान उत्पन्न होती थीं। मानों परिवार नियोजन की अपेक्षा ही नहीं थी। माता-पिता एक पुत्र और एक पुत्री को ही पैदा करते, वे भाई-बहन ही पति-पत्नी बन जाते। बाद में यह क्रम बदला और विवाह प्रणाली विकसित हो गई।

उनका दूसरा अवदान राजनीति के क्षेत्र में है। वे राजनीति विज्ञान के प्रणेता थे। उनसे पहले कुलकर व्यवस्था चली आ रही थी। कुलकर व्यवस्था का कुछ विकसित रूप उनके समय में हुआ। राजतांत्रिक प्रणाली का सूत्रपात भगवान ऋषभ से हुआ। शासन की कोई भी प्रणाली हो, उसमें तीन बातों की अपेक्षा होती है--विधान, शासन और शोधन। धार्मिक संदर्भ में भी शासन की इस प्रणाली को काम में लिया गया। हम आयारचूला, दसवेआलियं के पांचवें अध्ययन आदि आगमों के संदर्भों को देखें तो विधान के सूत्र प्राप्त हो सकते हैं। आगमों में आचार्य आदि पद बताए गए हैं, वे शासन से भी संबंधित हैं। उन सातों पदों में मुखिया आचार्य को माना जा सकता है। आचार्य धर्मशासन के शास्ता होते हैं। कहीं कोई अतिक्रमण हो जाए तो जैन शास्त्रों में शोधन की बात भी है। आगमों में निशीथसूत्र शोधन अर्थात् दण्डसंहिता का प्रस्तोता है। इस प्रकार जैन श्वेताम्बर आगमों के संदर्भों में विधान, शासन और शोधन की बात देखी जा सकती है।

इन तीनों बातों को राजनीति के संदर्भ में भी देखा जा सकता है। राजनीति में भी विधान चाहिए और उसका पालन करवाने के लिए शासन भी अपेक्षित होता है। भगवान ऋषभ के समय शासन के लिए राजा थे और आज सरकार होती है। अतिक्रमण होने पर वर्तमान में न्यायपालिका में दण्ड देने का विधान है। इस प्रकार राजतंत्र में भी विधान, शासन और शोधन का होना आवश्यक प्रतीत है। भगवान ऋषभ से पूर्व 'हाकार' 'माकार' और 'धिक्कार' नीति चलती थी, वे दंडसंहिता की स्फुलिंग थीं। भगवान ऋषभ ने अपना कर्तव्य मानकर लोकानुकंपा से समाजनीति और राजनीति जैसे सावद्य कार्यों का प्रवर्तन किया।

भगवान ऋषभ का तीसरा अवदान अध्यात्मनीति विज्ञान के रूप में प्राप्त हुआ। वे अध्यात्मनीति विज्ञान के प्रणेता थे। उन्होंने स्वयं पूर्ण अध्यात्म का जीवन स्वीकार किया। वे करपात्र के रूप में भिक्षा ग्रहण करते। वे पूरे मुंड नहीं बने। थोड़े केश रख कर वे केशी के रूप में रहे।'

पूज्यप्रवर ने समुपस्थित जनमेदिनी को संबोधित कर कहा--'भगवान ऋषभ को वर्षीतप कराने वाले तो आप गृहस्थ लोग हैं। गृहस्थों ने दान दिया नहीं तो उनके वर्षीतप अपने आप हो गया। उनको वर्षीतप कराने का श्रेय आप गृहस्थों को है। उनका लक्ष्य वर्षीतप का नहीं था, किन्तु दान की अनुपलब्धि ने उन्हें वर्षीतप करा दिया। आज उनका अनुसरण करते हुए कितने-कितने लोग वर्षीतप का समाचरण करते हैं। हालांकि भगवान ऋषभ का वर्षीतप अत्यन्त कठिन था, फिर भी साधिक एक वर्ष तक एक दिन खाना और एक दिन नहीं खाना भी कितना कठिन कार्य है। उसमें भी रात्रिभोजन का परिहार और भी विशेष बात हो जाती है। कितने-कितने तपस्वी व्यक्ति वर्षीतप की साधना से संपृक्त हुए हैं और कितनों का आज अनंतर पिछला वर्षीतप संपन्न होने जा रहा होगा। वर्षीतप के साथ साधना के कुछ नियम भी हैं, जिनका अनुपालन भी महत्त्वपूर्ण है। (पूज्यप्रवर ने वर्षीतप के दौरान अनुपालनीय साधना के नौ नियमों को सुनाया।) वर्षीतप के निमित्त से कितने-कितने संबंधी लोगों को धर्म के माहौल में आने का अवसर भी प्राप्त हो जाता है।'

आचार्यप्रवर ने तपस्वियों की ओर उन्मुख होकर कहा--'जिन लोगों का वर्षीतप आज संपन्न हो रहा है, उनके वर्षीतप काल में, साधना में, अज्ञात रूप में शारीरिक, वाचिक और मानसिक--कोई दोष लग गया हो तो उन्हें अतिरिक्त रूप में ५१ सामायिक का प्रायश्चित्त दिया जा रहा है।' समुपस्थित पारणार्थियों ने अपने स्थान पर खड़े होकर पूज्यप्रवर द्वारा प्रदत्त प्रायश्चित्त सविनय स्वीकार किया। पूज्यप्रवर ने अग्रिम वर्ष में वर्षीतप करने के इच्छुक लोगों को वर्षीतप का त्याग करवाया।

कार्यक्रम में वर्षीतप करने वाले भाई-बहनों ने भगवान ऋषभ के प्रतिनिधि आचार्यप्रवर को इक्षुरस बहरा कर धन्यता की अनुभूति की। इस क्रम में समणी शीलप्रज्ञाजी ने अपने १६वें वर्षीतप का पारणा किया। उनके सिवाय ६७ भाई-बहनों ने भी अपने वर्षीतप का पारणा किया।

कार्यक्रम के दौरान अहिंसा यात्रा की व्यवस्थाओं के दायित्व हस्तांतरण उपक्रम रहा। इससे पूर्व नेपाल-बिहार तेरापंथी सभा के अध्यक्ष श्री अभय पटावरी तथा कोलकाता चतुर्मास प्रवास व्यवस्था समिति के

अध्यक्ष श्री कमल दूगड़ ने अपनी आस्थासिक्त भावाभिव्यक्ति दी। पूज्यप्रवर से मंगलपाठ का श्रवण कर नेपाल-बिहार तेरापंथी सभा के कार्यकर्ताओं ने कोलकाता के कार्यकर्ताओं को दायित्व के प्रतीक के रूप में जैन ध्वज सौंपा। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी तथा प्रवास व्यवस्था समिति के संयोजक श्री हंसराज बेताला ने किया।

कार्यक्रम में भाजपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता श्री शाहनवाज हुसैन आदि अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। शाहनवाजजी ने तीनों दिन पूज्यप्रवर के दर्शन और उपासना का लाभ प्राप्त किया। उन्होंने पूज्यप्रवर के स्वागत में अपनी ओर से शहर में स्थान-स्थान पर हार्डिंग्स लगवाए और विभिन्न समाचार पत्रों में विज्ञापन भी दिए।

कार्यक्रम के उपरान्त आचार्यप्रवर तेरापंथी महासभा के मुख्य न्यासी व भागलपुर प्रवास व्यवस्था समिति के संयोजक श्री हंसराज बेताला परिवार के निवास स्थल पर पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ। आचार्यप्रवर के अनुग्रह से अभिस्नात छोटी खाटू और भागलपुर तेरापंथ समाज का यह प्रमुख परिवार धन्यता की अनुभूति कर रहा था।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर के पावन सान्निध्य में वर्षीतप का पारणा करने वालों की सूची

१. समणी शीलप्रज्ञा		२. श्री बच्छराजजी नौलखा	सरदारशहर
३. श्रीमती विमला दुगड़	दिल्ली	४. श्री चन्दनमल दक	रतलाम
५. श्रीमती चित्रलेखा नाहटा	हनुमाननगर, नेपाल	६. श्रीमती छोटीदेवी डागा	रायपुर
७. श्रीमती धनीदेवी दुधोड़िया	फारबिसगंज	८. श्री धरमचंदजी बडाला	मुम्बई
९. श्री दिनेश कोठारी	दुबई	१०. श्री गणेशमल पानमल बरमेचा	सूरत
११.श्रीमती गुलाबदेवी सुखानी	फारबिसगंज	१२. श्रीमती गुणवंतीदेवी भोगर	सूरत
१३.श्रीमती हेमलता डींग	मुम्बई	१४. श्रीमती इचरजदेवी सेठिया	बुरहानपुर
१५. श्रीमती इंदू दुगड़	दिल्ली	१६. श्रीमती जतनदेवी बोथरा	जोकीहाट
१७. श्रीमती जतनदेवी दुगड़	सप्तरी (नेपाल)	१८. श्री कमल डागा	कोलकाता
१९. श्रीमती कमलादेवी आच्छा	भीलवाड़ा	२०. श्री कमलेश जैन	जैतो मंडी, पंजाब
२१. श्रीमती कंचन पटावरी	दिल्ली	२२. श्री कन्हैयालाल खटेड़	बंगलुरु
२३. श्रीमती कांता चोरड़िया	मुर्सिदाबाद	२४. श्रीमती कांता नंगावत	जामनगर
२५. श्रीमती किरण बरमेचा	तेजपुर	२६. श्रीमती लक्ष्मीदेवी बडाला	मुम्बई
२७. श्रीमती लीला धोका	चेन्नई	२८. श्रीमती लीलादेवी लालवानी	गुलाबबाग
२९. श्रीमती मंजूदेवी सेठिया	सूरत	३०. श्रीमती मंजूदेवी भादानी	कूचबिहार
३१. श्रीमती मंजूदेवी चोरड़िया	मोरंग, विराटनगर	३२. श्रीमती मंजुला दुगड़	विशाखापत्तनम
३३. श्रीमती मोहन माला सिपानी	रायपुर	३४. श्रीमती ममता बागरेचा	अहमदाबाद
३५. श्रीमती निर्मलादेवी कोठारी	दिल्ली	३६. पी. इंद्रा	मैसूर
३७. श्रीमती पंचशीला पटावरी	हनुमानगढ़	३८. श्रीमती प्रभादेवी गोल्छा	रायपुर
३९. श्रीमती प्रेमलता सुराणा	मधुबनी	४०. श्रीमती पुष्पादेवी चोपड़ा	गुलाबबाग
४१. श्रीमती रश्मि गिड़िया	भुवनेश्वर	४२. श्रीमती रतनीदेवी दुगड़	वेल्लुर
४३. श्रीमती सविता सेठिया	इनरवा (नेपाल)	४४. श्रीमती शांता बहन मेहता	सूरत
४५. श्रीमती संतोषदेवी दक	मैसूर	४६. श्रीमती सारिका दुगड़	कोलकाता
४७. श्रीमती सारिका जैन	उल्लासनगर	४८. श्रीमती शशिबाला	जैतो मंडी, पंजाब

Postal Reg. No. DL (C)-01/1243/15-17 Wed.-Thu.
L.No.-U (C) 200/2015-2017
Licence to Post without Pre-payment
Regd. No. 61758/95 Office of Posting N.D.P.S.O.

४९. श्रीमती सीमा जैन	उड़ीसा	५०. श्रीमती शकुंतलादेवी जैन	भटिंडा
५१. श्रीमती शांतिदेवी संचेती	कटिहार	५२. श्रीमती सुमन सुराणा	मुम्बई
५३. श्री सुशीलकुमार घोषल	फारबिसगंज	५४. श्रीमती सुशीलादेवी बैद	दिनहटा
५५. श्रीमती सुशीलादेवी कगोत	जोधपुर	५६. श्रीमती सुषमा जैन	जैतो मंडी, पंजाब
५७. श्रीमती तारा हिरावत	कोलकाता	५८. श्रीमती विजया श्रीमाल	जयपुर
५९. श्री दिनेशचन्द्र धारीवाल	हैदराबाद	६०. श्रीमती बसंत कंठालिया	उदयपुर
६१. श्रीमती गुलाबीदेवी सुखानी	बंगलुरु	६२. श्रीमती रोहिणीदेवी छाजेड़	बालोतरा
६३. श्रीमती कंचनदेवी बोथरा		६४. श्रीमती बदाम बाई मादरेचा	भाणा
६५. श्रीमती किरणदेवी छाजेड़		६६. श्रीमती मनोहरीदेवी छाजेड़	मुम्बई
६७. श्री नरपत दुगड़	महुरैया	६८. श्री दिनेश धारीवाल	हैदराबाद

शासनश्री मुनि मोहनलालजी शार्दूल का प्रयाण

२ मई को लाडनूं प्रवासित शासनश्री मुनि मोहनलालजी 'शार्दूल' का प्रयाण हो गया। उनके विषय में आचार्यप्रवर के उद्‌गार पढ़ें आगामी विज्ञप्ति में।

परम पूज्य आचार्यप्रवर को झारखंड सरकार द्वारा राज्य अतिथि का सम्मान

२ मई को झारखंड सरकार ने परम पूज्य आचार्यप्रवर को अपने राज्य की यात्रा के संदर्भ में राज्य अतिथि का सम्मान अर्पित करते हुए संबंधित विभागों को आवश्यक निर्देश जारी किए हैं। इससे पूर्व हिन्दुस्तान के दस राज्य आचार्यप्रवर को यह सम्मान समर्पित कर चुके हैं।

आदर्श साहित्य संघ को भेंट

३१००/- स्व. श्रीमती मोहिनीदेवी रामपुरिया (धर्मपत्नी शासनसेवी श्री रतनलालजी रामपुरिया, बीकानेर-कोलकाता) की प्रथम पुण्यतिथि (२१ अप्रेल २०१७) पर उनके सुपुत्र अभयकुमार, राजेन्द्रकुमार एवं समस्त रामपुरिया परिवार द्वारा प्रदत्त।

२१००/- श्रद्धानिष्ठ श्रावक स्व. श्री कुन्दनमलजी कोठारी (सुपुत्र स्व. लालचंदजी कोठारी, रीछेड़-कांकरोली) की पुण्यस्मृति में उनके सुपुत्र व पुत्रवधू हिम्मत-निर्मलादेवी, सुपौत्र व पौत्रवधू जयेश-मिताली, सुशील-रेनू कोठारी द्वारा प्रदत्त।

२१००/- स्व. श्री मंगतरामजी जैन (हरनामसिंह चंद्रसेन जैन, जनता राइस मिल, केसिंगा, उड़ीसा) की स्मृति में उनके पारिवारिक जनों द्वारा प्रदत्त।

२१००/- श्रद्धा की प्रतिमूर्ति स्व. श्रीमती लक्ष्मीदेवी भंडारी (धर्मपत्नी श्रद्धानिष्ठ श्रावक श्री हरकचंदजी भंडारी, पेटलावद) की पुण्यस्मृति में उनके सुपुत्र भूपेन्द्रकुमार, अशोककुमार, लोकेशकुमार व सुपौत्र मयंक, सौरभ, सुरभित, संयम एवं प्रपौत्र अर्हम भंडारी द्वारा प्रदत्त।

पत्र व्यवहार की दृष्टि से हमारा पता है--

केशवप्रसाद चतुर्वेदी, प्रबन्धक-आदर्श साहित्य संघ, द्वारा-श्री हंसराज बेताला, शुजागंज बाजार, पो.भागलपुर-८१२ ००१ (बिहार)

शिविर कार्यालय का मोबाइल नं. ७२५८०६६६८७, ७२५८०६६५४५

स्वामी आदर्श साहित्य संघ के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक हेमराज बैद के द्वारा पवन प्रिंटर्स, जे-६, नवीन शाहदरा, दिल्ली ११००३२ से मुद्रित एवं आदर्श साहित्य संघ, अणुव्रत भवन, २१० दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली ११०००२ में प्रकाशित। सम्पादकः केशवप्रसाद चतुर्वेदी